# कितने सपने कितनी हकीकत

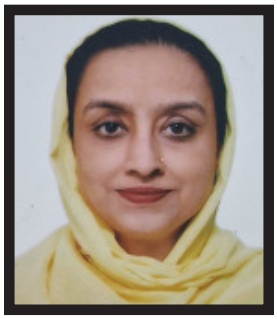

**सलीमा**
मो. 8076225060

**वातावरण** में, 'जय श्रीराम' के नारे अब तेजी से गूंज रहे थे। भीड़ नारे लगाती हुई नूपुर रोहतगी के आलीशान अपार्टमेंट के नीचे से गुजर रही थी। नूपुर अपनी बालकनी से भीड़ को अपनी तरफ आते हुए देख रही थी और फिर उनके और करीब आने पर, नारों की आवाज बुलंद होते हुए सुन रही थी। वह शांत थी। भीड़ नारे लगाती हुई उसकी बालकनी से गुजर गई और 'श्री राम की जय जयकार', और 'मुल्लो भागो पाकिस्तान' के नारे धीरे-धीरे धीमे होते हुए समाप्त हो गए।

यह नफरत और आक्रामकता से ओत-प्रोत नारे नूपुर में मानो नई ऊर्जा का संचारण कर गए। उसका मन बल्लियों उछल रहा था, अपने अंदर उसने एक नया उत्साह सा महसूस किया। वह अपने कमरे की बालकनी से सीधे अपनी श्रृंगार मेज की तरफ बढ़ी और अपने लंबे-लंबे बाल संवारने लगी ताकि अपने यूट्यूब चैनल के लिए एक और तड़कती-भड़कती वीडियो बना सके।

नूपुर एक बेहद सुंदर चेहरे, बड़ी-बड़ी आंखों और भरे-भरे होंठो की मालकिन थी। उसका व्यक्तित्व बहुत आकर्षक था।

उसे याद था, जैसे-जैसे वह अपने बालपन को पीछे छोड़कर किशोरावस्था की ओर बढ़ रही थी उसके रिश्तेदार और जाननेवाले उसे एक ही सलाह देते कि, 'बड़े होकर तुम हीरोइन ही बनना।' नूपुर ने पहले तो इस बात पर गौर नहीं किया पर जैसे-जैसे वो बड़ी होती गई उसे अहसास होने लगा कि वह सचमुच बहुत आकर्षक है। फिर चाहे वो रास्ते चलते लोग उसे घूर-घूर कर देखते हों या उसकी साथी लड़कियों या आंटियों की ईर्ष्या भरी नजरे हों, सब उसे एहसास करातीं कि वह बेहद सुंदर है।

अपने आपको शीशे में निहारते हुए वह अपनी उंगलियों से अपने बाल संवार रही थी। साथ में कुछ मुँह में बुदबुदाते हुए अपने यूट्यूब चैनल की अगली वीडियो की रिहर्सल कर रही हो। उसने अपनी नारंगी रंग की लिपिस्टक कुछ और गहरी की जो उसके नारंगी रंग के जैकेट से बिल्कुल मैच कर रही थी।

अपनी घुटनों से ऊपर डेनिम की स्कर्ट थोड़ी खींचकर उसने नीची करी

और तैयार हो गई मौजूदा सरकार की प्रशंसा में अपनी अगली वीडियो बनाने के लिए। अपना वीडियो बनाकर उसे विभिन्न सामाजिक मीडिया पर पोस्ट करके वो अतीत में खो गई। उसे वो दिन याद अभी याद है, जब उसका स्नातक का रिजल्ट आया था। उसी दिन उसने अपने माता-पिता से अपने बॉम्बे जाकर फिल्मों में भाग्य आजमाने की बात कही थी। कुछ नानुकुर करने के बाद उसके अभिभावक उसकी जिद्द के आगे झुक गए।

कुछ महीने बॉम्बे में, अथक प्रयासों से उसे एक बड़ी फिल्म में काम मिल गया। यह बड़ी फिल्म उसे यूं ही नहीं मिली थी। सत्ता के गलियारों से एक सिफारिश आई थी नूपुर के लिए। वह धीरे-धीरे अब फिल्मी पार्टियों से अधिक, राजनीतिक पार्टियों में चर्चा का विषय बन रही थी। उसकी पहली बड़ी फिल्म जिसमें उसके अलावा दर्जनों स्टार कास्ट भरी पड़ी थी और इन सबके बीच वो अपनी छाप छोड़ने में असफल रही और इस तरह वो अपनी पहचान बनाने में असफल रही। फिर कुछ सालों के बाद वह कुछ 'बी ग्रेड' की फिल्मों में काम पाने में सफल रही। कुछ रियल्टी शो और एड फिल्में करने पर भी नूपुर वो स्थान नहीं पा पाई जिसकी उसने कल्पना की थी।

आहिस्ता-आहिस्ता उसका फिल्मी सफर मानो समाप्त हो गया, मगर उसका एक चर्चित राजनेता संग जीवन का सफर शुरू हो गया था। वो उन दिनों बहुत खुश थी और अक्सर पेज 3 पार्टियों का हिस्सा रहती। गुपचुप होती राजनीतिक पार्टियों और रेव पार्टियों में भी अपनी उपस्थिति दर्ज कराती। शायद इसी बीच उसे राजनीति का चस्का लगा। नूपुर का उस राजनेता, मंजुल नाथ से 'लिव इन रिलेशन' कोई छह साल बाद ही समाप्त हो गया।

मगर एक राजनीतिक सफर उसका शुरू हो गया था। फिल्मों में तो उसके कोई खास संबंध नहीं बन पाए पर राजनीतिक संबंध बहुत मजबूत बन गए थे। टिकट पाने की लालसा में यहां भी उसका खूब शोषण हुआ। यह वह समय था जब नूपुर अपने व्यावसायिक और व्यक्तिगत सबसे बुरे दौर से गुजर रही थी। यही वो समय था जब उसने महानगरी बॉम्बे छोड़कर, अपने पैतृक घर काठियावाड़ का रुख किया।

उसका व्यक्तिगत जीवन उसके हाथ में नहीं था पर उसने अपने व्यावसायिक जीवन को सुधारने की ठान ली थी। इसकी शुरुआत उसने अपना एक यूट्यूब चैनल खोलकर किया। इस चैनल पर वो हर सप्ताह अपने एक-दो राजनीतिक विडियोज बनाकर पोस्ट कर देती और साथ ही अपने अन्य सामाजिक मीडिया पर भी साझा कर देती। सनातन सार बाय नूपुर' नामक चैनल को कुछ लाइक्स तो मिल जाते पर सब्सक्राइबर्स नहीं मिल रहे थे। खैर अपने विचार वो एक खास समाज/धर्म के विरुद्ध अपने विडियोज द्वारा रखने लगी। पर, वर्षों तक इस पर भी काम करके उसे कुछ खास सफलता नहीं मिली। देश में इस समय जो वर्तमान सत्तारूढ़ पार्टी जो कि उसी धर्म विशेष के विरुद्ध थे। वह अपनी हर नीति को इस तरह आकृति देती कि उस विशिष्ट अल्पसंख्यक वर्ग/समुदाय को न सिर्फ मानसिक बल्कि सामाजिक और आर्थिक हानि भी पहुंचे। उस राजनीतिक पार्टी ने भी नूपुर को घास नहीं डाली।

उसकी विडियोज जो केवल जहर उगलती थीं, सनातन धर्म के आदर्शों से उसका दूर का भी नाता न था। पर उसका एक अपना एक दर्शकगण बन गया था और नूपुर के वह विचार सिर्फ वर्चुअल संसार तक ही सीमित थे, वास्तविकता से उसका कोई लेना देना नहीं था। वो धीमे-धीमे अपने इसी आभासीय संसार में धंस रही थी जैसे कुछ वर्ष पहले वो फिल्मी संसार की गर्त में धंस रही थी। ठीक इसी समय भारत की राष्ट्रीय हॉकी टीम का कप्तान उससे संपर्क बनाता हैं। उसके राजनैतिक विचार से एक मत रखता है, अपनी सहमति उस खिलाडी 'शिवान देवा' ने नूपुर की कई विडियोज में दिखाई थी। जल्द ही दोनो अच्छे दोस्त बन गये और यह दोस्ती प्यार मे बदलते देर ना लगी दोनों अब रेस्ट्रॉन, पब और सार्वजिक स्थानों पर मिलने लगे। कभी-कभार दोनो के फैंस उन्हे घेर लेते और उन से उनके रिश्ते की बाबत कई प्रश्न पूछते। करीब सालभर तक वो ऐसे ही मिलते रहे और एक-दूसरे को समझते रहे। अपने अतिव्यस्त कार्यक्रम से समय निकालकर शिवान, नुपूर के साथ समय बिताता। जब उनसे यह लंबी दूरी का रिश्ता नहीं संभला तो नुपूर ने शिवान को कोयंबतूर छोड़कर दिल्ली मे बसने के लिये मना लिया। नुपूर ने काठियावाड और शिवान ने कोयंबतूर छोड़ा और दिल्ली में एक किराए के आवास में स्थानातंरित हो गये। नुपूर अपने विडिओ और ऑडियोज वैसे ही सामाजिक मीडिया

पर पोस्ट कर रही थी, जिसको लेकर एक वर्ग उसकी आलोचना करता था। इन विडियोज के चलते कुछ माध्यमों से उसका अकाउंट्स हटा भी दिया गया था। पर वो ऐसे ही सजधज के उसी उत्साह से एक सच्चे अंधभक्त की तरह वैसे ही नफरती विडियोज पोस्ट किए जा रही थी। इधर शिवान अपने करियर में व्यस्त होता जा रहा था, उससे देश को बहुत आशाएं थीं। ओलिंपिक खेल नजदीक थे और शिवान से देश के लोगों को दूसरे स्वर्ण पदक की अपेक्षाएं थीं। शिवान ने भी खेल के अभ्यास में दिन-रात एक कर रखा था ताकि वो अपनी नूपुर को एक अच्छी जिंदगी दे सके। वह नूपुर से बहुत प्रेम करता था और उससे शादी करना चाहता था। देखते ही देखते उन्हें साथ-साथ रहते आठ वर्ष हो गए थे। इस समय दोनों के घरवालों की तरफ से शादी को लेकर दबाव बन रहा था। न सिर्फ वो दोनों ही बल्कि उनके घरवाले भी उनकी शादी बहुत धूमधाम से करना चाहते थे। जिसके लिए शिवान दिन-रात एक करके पैसा कमा रहा था, ताकि शादी किसी राजमहल में राजसी ठाठ-बाट से हो, हजारों मेहमान आएं, और मेहमानों को रिटर्न गिफ्ट्स भी मिलें, दुनिया भर से बीम आएं और अनगिनत पकवान मेहमानों को परोसे जाएं। यह सारी ख्याली तैयारियां करते-करते दो वर्ष और बीत गए। पर नूपुर क्योंकि पहले भी धोखा खा चुकी थी, तो दूध का जला छाछ भी फूंक-फूंक कर पीता है। उसने सोचा कि शिवान भी काफी समय टाल रहा है, कहीं मंजुल की तरह धोखा न दे दे। 'अगले महीने शादी कर लूंगा', 'अगले साल कर लूंगा', यही सब कहते-कहते कभी उसका एड शूट आ जाता, कभी खेल के अभ्यास की बारी, तो कभी टी.वी, का कोई रियल्टी शूट या फिर कोई अपना नया बिजनेस। वो इन सबमें व्यस्त हो जाता। नूपुर ने इसका एक उपाय निकला। उसने प्री-कॉशन्स लेने छोड़ दिए और अपना पूरा ध्यान अपने मां बनने में लगा दिया। वो अक्सर सोचती कि वह शिवान को जब अपने मां बनने की खुशखबरी देगी तो उसे मजबूरन शादी करनी ही पड़ेगी। इधर नूपुर ने अपनी पूरी ताकत लगा दी, पर हजार कोशिशें करके भी वो गर्भधारण ना कर सकी। उसकी यह मंशा शिवान से भी ना छुपी रह सकी। उसने नूपुर को समझाया और अपने प्यार का भरोसा दिलाया पर इस बार नूपुर न मानी और अपने प्रेमी से लड़ पड़ी कि तुम्हारी भव्य शादी के चक्कर में उसकी जैविक घड़ी बीतती जा रही है। काश वो (जब उनका यह संबंध शुरू ही हुआ था तब एक बार वो गर्भवती हुई थी) तब अपना गर्भपात ना कराती तो आज एक आठ-नौ वर्ष के बच्चे की मां होती। शिवान सब समझता था इसीलिए उसने नूपुर की खातिर उसको शहर की श्रेष्ठ स्त्री रोग विशेषज्ञ को दिखाता है। डॉक्टर ने कुछ दवाइयां दीं, कुछ टेस्ट करवाए फिर उन्हें छह सप्ताह बाद आकर दिखाने को कहा। लेकिन कोई सकारात्मक परिणाम नहीं आया। इलाज अब तीन माह का और बढ़ाया गया। डॉक्टर टीना ने उन्हें तसल्ली दी कि इलाज से सब ठीक हो जाएगा। पर अब नूपुर अपना सब्र खो चुकी थी। वह अपनी नौकरानी के साथ किसी आध्यात्मिक गुरु के पास भी जाने लगी थी। वहां वो झाड़ फूंक के साथ अपना देसी इलाज भी कराने लगी थी, पर कोई आस नजर न आई थी।

होते-होते यह बात दूर गांव में बैठी शिवान की माँ के कानों तक भी पहुंची। उसने शिवान से उसी समय वीडियो कॉलिंग की और स्थिति का जायजा लिया। अभी तक तो केवल नूपुर ही तनाव में थी अब उसकी होनेवाली सास भी तनाव में आ गई।

वो अब शिवान को लगभग रोज ही फोन करके दबाव बनाती कि शिवान उसकी पसंद की लड़की से शादी करके अपना घर बस ले। उन्हें नूपुर पहले से ही पसंद नहीं थी वो केवल शिवान की पसंद के कारण चुप थीं। पर अब वो अपने लाडले बेटे को संतानहीन कैसे देख सकती थीं। कोई भी माँ अपने बच्चे को एक भावी माता या भावी पिता के रूप में देखता है। वो भी शिवान को संतान सुख से परिपूर्ण देखना चाहती थीं। नूपुर को जब माताजी की यह मंशा जान पड़ी तो वह और तनाव में आ गई थी।

शिवान से उसका रिश्ता अब पहले-सा नहीं था। उसे अब अपना भविष्य अंधकारमय दिख रहा था। शिवान नूपुर को दिलोजान से चाहते हुए भी अपने माता-पिता से उचित दूरी नहीं बना पाया। वो अपने परिवार के भी बहुत निकट था, नूपुर को डर था कहीं शिवान अपने माता-पिता की बातों में आकर वापस कोयंबतूर न चला जाए।

इसका भी उसने एक हल जल्दी ही निकाल लिया। अपने उसी यूट्यूब

चैनल और अन्य मीडिया में आकर उसने बड़े भावनात्मक पोस्ट डालने शुरू कर दिए जिनमें उसने शिवान से कहीं अन्यत्र विवाह करने की प्रार्थना की। उसने इन चैनलों पर शिवान से हाथ जोड़कर विनती की कि वह उसको संतान का सुख नहीं दे सकती इसीलिए वो किसी कम उम्र लड़की से ब्याह रचा ले। आगे की विडियोज में उसने शिवान से कहा कि वो भविष्य में उसको बहुत सारे बच्चों का पिता के रूप में देखना चाहती है, और इस तरह उसे हमेशा खुश देखना चाहती है। आँखों में मोटे-मोटे आंसू भरकर वो आगे कहती है, 'मैंने आस छोड़ दी है माँ बनने की पर तुम शादी कर लो' वह आगे हाथ जोड़कर कहती है, 'तुम्हें ढेर सारे बच्चों में से एक को मैं गोद ले लूंगी और उसी के सहारे अपना जीवन काट लूंगी।'

नूपुर ने उन विडियोज में अपनी वफादारी की कसमें खाईं और कहा कि शेष जीवन वो बिना शादी के ही काट लेगी। यह सारी इमोशनल विडियोज शिवान के घरवालों के अलावा उन सभी ने देखें जो जरा-सा भी बॉलीवुड और खेलों में दिलचस्पी रखते थे।

उन दोनों के ही फैंस को नूपुर से सहानभूति हुई और कुछ दिनों में लाइक्स और सब्सक्राइबर्स दोगुने हो गए। यह इमोशनल विडियोज अब वायरल होने लगे। सोशल मीडिया पर चर्चा का विषय बन गए जो चर्चा नूपुर की सहानुभूति से शुरू होकर शिवान की आलोचना पर भी खत्म नहीं होने का नाम ले रही थी। हजारों लाखों फैंस अब शिवान से सवाल पूछ रहे थे कि क्यों वह बच्चे के चलते अपना इतना पुराना प्यार भरा रिश्ता तोड़ रहा है। वजह क्या सिर्फ नूपुर का माँ न बन पाना है? इस पर शिवान बहुत ट्रोल हो रहा था। 'क्या यही है प्यार तुम्हारा?' एक फैन ने पूछा, 'अगर कोई स्त्री माँ नहीं बन पा रही तो इसमें उसका क्या कसूर है?' एक यूजर ने तो कहा, 'नूपुर एक अच्छी बीवी बन सकती है, वो एक अच्छी बहू, भाभी, मामी, चाची, जेठानी, देवरानी सब बन सकती है, यदि वो एक माँ नहीं बन सकती तो इसमें उसका क्या दोष है? 'कुछ लोगों ने उनको आईवीएफ की सलाह भी दे डाली। नूपुर तो इतनी चर्चा में जब भी नहीं आई थी, तब वो बॉलीवुड में थी। वो लोगों की सहानुभूति प्राप्त करने में कामयाब हो गई।

इस समय शिवान एक चक्रम की भांति हो गया था वो अपने करियर पर भी ध्यान नहीं दे पा रहा था। वह सोचने में असमर्थ था कि अपने बिजनेस को आगे बढ़ाए या अपने माता-पिता पर ध्यान दे या फिर नूपुर के साथ उसके संबंधों को नया आयाम दे।

वो नूपुर को सचमुच नहीं छोड़ना चाहता था पर अपने माता-पिता को भी नाराज नहीं करना चाहता था। इन सबके बीच नूपुर दिल्ली से लगे, गाज़ियाबाद में अपने किसी ज्ञात बंदे के स्पा का उद्घाटन करने गई। जहाँ उसकी मुलाकात सीमा चौधरी नामक लड़की से हुई जो उसी स्पा में कर्मचारी/ ब्यूटीशियन थी। सीमा ने उसकी सुंदरता में कसीदे पढ़े और कहा कि वो नूपुर की बड़ीवाली प्रशंसक है। जल्द ही दोनों की अच्छी बातचीत होने लगी। कई बार नूपुर सीमा को घर पर ही फेशियल और मालिश के लिए बुला लेती। इन्हीं मुलाकातों में सीमा ने नूपुर को सेरोगेसी का सुझाव दिया और अपनी कोख उधार देने की बात की। वो नूपुर की इतनी बड़ी फैन थी कि इस काम के लिए वो किसी पारिश्रमिक भी लेने से इंकार कर रही थी। नूपुर को यह सुझाव पसंद आया और उसने शिवान को सेरोगेसी के लिए मना लिया। वो अब और समय नहीं गंवाना चाहती थी। और अपने पर आईवीएफ का प्रयोग भी नहीं करना चाहती थी। अपनी डॉक्टर टीना से उसने सीमा को मिलवा दिया। सीमा की कुछ प्रारंभिक जांचें हुई और उसे पूरी प्रक्रिया के बारे में बता दिया। नियत समय पर सेरोगेसी के लिए सीमा को क्लीनिक बुलाया गया। पूरी प्रक्रिया कुछ समय की थी और सीमा को शाम तक उसके घर भेज दिया गया। अब नूपुर और शिवान कई मंदिरों में चढ़ावे और मन्नतें मांगते फिरे। उन दोनों को ही अपने बच्चे की लालसा थी। दोनों के लिए ही यह चंद रोज बरसों के बराबर थे। उनका इंतजार समाप्त हुआ कुछ ही सप्ताह में सीमा ने उन्हें यह खुशखबरी सुनाई। सीमा से और क्लीनिक स्टाफ से यह बात राज रखने को कही गई।

यह बात तय की गई कि जब सीमा की डिलीवरी हो जाएगी तभी मीडिया में यह बात डिक्लेयर की जाएगी कि यह जोड़ा मां-बाप बन गया है। सेरोगेसी भी टॉप सीक्रेट रखी जाएगी। इसी के चलते सीमा से भी कहा गया कि कुछ दिन बाद ही वह स्पा जाना भी छोड़ दे और घर पर आराम करे।

सीमा के खान-पान का दवाइयों का नूपुर बहुत ध्यान रखती। इस लंबी प्रतिक्षा के बाद प्रसव का भी समय आ गया। प्रसव पीड़ा से तड़पती सीमा डाक्टर टीना के क्लीनिक में ही दाखिल हुई। नूपुर उसका हाथ पकड़ी एक-एक पग उसके स्ट्रैचर के साथ थी। अपने दाएं हाथ की मुट्ठी में सीमा कुछ भींचे हुए थी। पसीनो से वो भीगी हुई थी और अपने होठों में अंदर ही अंदर जैसे कोई प्रार्थना या जाप कर रही थी। नूपुर उसका बायां हाथ लगातार पकड़े हुए थी और उसे बराबर सांत्वना दे रही थी। अपने दोनों हाथों में उसका हाथ लेकर वो सीमा को प्यार से पुचकार रही थी। इस वक्त तो मानो नूपुर सीमा चौधरी से भी अधिक घबरा रही थी। उसकी टांगे कांप रही थीं और हृदय गति बड़ी तेज लग रही थी। नर्स जब सीमा चौधरी को चेक करने आई तो वहीं से उसने जूनियर नर्स को चिल्लाकर बुलाया और कहा कि मरीज अब डिलीवरी के लिए तैयार है और वो डॉ. टीना को तुरंत बुला लाए। यह कहकर वह सीमा का स्ट्रैचर स्वयं ही ठेलकर ओ.टी. की ओर ले गई। नूपुर का वर्षों का सपना मानो साकार होनेवाला हो। अब वह कुछ ही पलों में माँ बननेवाली है, यह सोचकर ही वह रोमांच से भर उठी। अपने शिशु को गोद में भरने का अनुभव ही कुछ और होता है, यह सोचकर अनायास ही वो अपने हाथों की गोद बनाने लगी कि तभी उसकी हथेली में कुछ चुभा। उसने अपनी मुट्ठी खोलकर देखी तो भौचक्की रह गई। उसकी हथेली पर एक बड़ा-सा सिक्का चमक रहा था। उसने फटी-फटी आंखों से जल्दी से

## सूचना व आग्रह

**पत्रिका में बहुजन साहित्य की तीनों धाराओं यानी दलित साहित्य, आदिवासी साहित्य और पिछड़ा वर्ग साहित्य के साथ स्त्री सशक्तिकरण से जुड़ी रचनाएं आमंत्रित है। हम अन्य उपेक्षित अस्मिताओं जैसे विकलांगता व थेड जेंडर को भी महत्व देंगे। साथ ही जन सरोकारों से जुड़े लेखकों को भी छापेंगे।** संपादक मंडल

उस सिक्के को उलट पलट कर देखा तो सिक्के के एक ओर मुसलमानों की प्रसिद्ध काबा और दूसरी ओर अल्लाह लिखा था। नूपुर भारी पगों से बढ़कर ओ.टी. के बाहर बिछी बेंच पर धम्म से बैठ जाती है। उसकी स्थिति ऐसी थी जैसे उसे लकवा मार गया हो। उसे पता ही नहीं चला कि कैसे सीमा के हाथ में वो सिक्का आ गया। प्रसव में भयंकर पीड़ा को सहने के लिए और ताकत लेने के लिए सीमा ने वो सिक्का अपनी मुट्ठी में ले रखा था। नूपुर बुदबुदाई, 'उसे इतना बड़ा कदम उठाने से पहले सीमा की पृष्ठभूमि चेक करानी चाहिए थी। कैसे वो भावनाओं में बहकर इतना बड़ा फैसला कर बैठी?' उसने बेंच के सिरे अपने दोनों हाथों से पकड़ लिए और बुदबुदाई, 'अब समझ आ रहा है कि क्यों सीमा उसकी फैमिली के बारे में कुछ पूछने पर सकपका जाती थी और बड़ी कुशलता से उसको टाल देती थी।" नूपुर को याद आया कि जब वो और शिवान सीमा के किराए के घर पर उससे मिलने जाते थे तब वहाँ वह अकेली रहती थी तब एक बार नूपुर ने घुमा फिराकर उससे उसकी फैमिली के बारे में जब पूछा तो सीमा बुरा मान गई और कहा, 'क्या दीदी जिस फैमिली के बारे में आप पूछती हो उसे तो मैं दसियो साल पहले दूर गांव में छोड़कर आई हूँ।' गहरी साँस लेकर वो आगे बोली, 'शहर उनके लिए ही कमाने आई थी मगर उन्होंने सारे नाते रिश्ते खत्म कर लिए मेरा उनसे अब कोई सरोकार नहीं है।'

नूपुर ने भी उसकी इस हालत को देखते हुए फिर उससे कोई ऐसा प्रश्न नहीं पूछा।

नूपुर को अब लगा कि पीड़ा के दौरान सीमा जो मन ही मन बुदबुदा रही थी वो शायद अरबी में कुछ पढ़ रही थी। तभी ओ.टी. से नवजात शिशु के रोने की आवाज आती है। यह पल मानो नूपुर में व्याप्त सारी कड़वाहट सारे विष को निचोड़कर उसमें से निकाल देता है। उस एक ही पल में वो वर्षों से मुसलमानों के लिए पलता विष उसके मन-मस्तिष्क से मानो निकल जाता है और उसके गुलाब जैसे चेहरे पर एक अनूठी चमक आ जाती है। वो सिक्के को चूमकर उसे अपनी मुट्ठी में भींच लेती है फिर मुस्कुराकर बेंच से उठ खड़ी होती है।

कहीं दूर से 'जय श्री राम' के नारे उसके कानो में आते हैं। पर वो खोखले नारे उस पर पहले के जैसे असर नहीं करते उसके कानो में तो उसके बच्चे की किलकारियां गूँज रही थीं❑